निस्केयर
NISCAIR

मार्च 2014

सम्पादक

प्रदीप शर्मा

सह सम्पादक

डा. बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी

सुप्रिया गुप्ता

एस. पी. सिंह

कला अधिकारी

नीरू विजन

योगेश कुमार आनंद

कम्पोजिंग

मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं विज्ञापन अधिकारी

परवेज़ अली खान

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी

लोकेश कुमार चोपड़ा

मार्च 2014

विज्ञान प्रगति

लुप्तप्राय प्रजाति संरक्षण प्रयोगशाला (लैकोन्स)

विज्ञान प्रगति के इस अंक में 'विचित्र किन्तु सत्य' के अन्तर्गत वरिष्ठतम लेखक डॉ. सुधांशु कुमार जैन के लेख जीव-जन्तुओं में भी जाति-पाति का भेदभाव को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस लेख को आप विशेष रूप से पढ़ें और मनन करें।

भारत में पौधों एवं वन्य जीवों में अद्भुत जैव-विविधता पाई जाती है। वनों के लगातार हो रहे विनाश के कारण बिल्ली जाति के कई वन्य जीवों जैसे सिंह, बाघ एवं तेंदुआ आदि के लिए प्राकृतिक आवास की विकट समस्या उत्पन्न हो गई है तथा वे अपनी जाति के सदस्यों से अलग-थलग पड़ते जा रहे हैं। इन वन्य जीवों को स्वयं को बनाए रखने के लिए सहज एवं बड़े क्षेत्रफल वाले वनों की आवश्यकता होती है। इन वन्य जीवों के बिखराव से इनमें प्रजनन की समस्या उत्पन्न हो गई है जिसके कारण इनमें पाई जाने वाली आनुवंशिक विविधता की क्षति होती जा रही है और ये बंध्य एवं लुप्त होने की कगार पर पहुँच चुके हैं। इस समस्या से निपटने के लिए कोशिकीय एवं आणविक जीवविज्ञान केन्द्र (सीसीएमबी), हैदराबाद ने सभी विकल्पों पर विचार करते हुए, जैवप्रौद्योगिकी का उपयोग कर एक अनुसंधान कार्य प्रारंभ किया है। केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, जैव-प्रौद्योगिकी विभाग, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् तथा आंध्र प्रदेश सरकार की भागीदारी में इसे आरंभ किया गया है। आंध्र प्रदेश सरकार की ओर से इस प्रयोजन हेतु 7 एकड़ भूमि उपलब्ध करायी गयी है।

भारत के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने वन्यप्राणी संरक्षण के इस महान कार्य के लिए निर्मित लुप्तप्राय प्रजाति संरक्षण प्रयोगशाला (लैकोन्स) को 1 फरवरी, 2007 को देश को समर्पित करने की सहमति दी। भारतीय विज्ञान के लिए यह एक ऐतिहासिक, अविस्मरणीय एवं प्रेरणादायी कदम सिद्ध हुआ। इस उपलब्धि से अब भारतीय चिड़ियाघर लुप्तप्राय प्रजातियों के वैज्ञानिक-प्रजनन के लिए प्रयोगशालाओं के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आनुवंशिक कार्यक्रम के तहत सिंह तथा बाघ की आनुवंशिक विविधता को निर्धारित करने तथा उच्चस्तरीय जैवविविधता दर्शाने वाले जीनोटाइपों के चयन करने का प्रस्ताव है, ताकि इन प्रजातियों में मौजूद इस आनुवंशिक विविधता को बनाए रखा जा सके। जानवरों में प्रजनन समस्या के लिए कृत्रिम शुक्राणु सेचन या इनविट्रो निषेचन तकनीकों की सहायता ली जा सकती है जिस प्रकार मनुष्यों में टेस्ट-ट्यूब बेबी की संकल्पना प्रचलित है।

इस तरह वैज्ञानिक रूप से जन्मे जानवरों को, उनके वन्य प्राणी लक्षणों को बनाए रखने के उद्देश्य से वन-सीमांत प्रांतों में मानवों के कम से कम हस्तक्षेप वाले क्षेत्र में रखा जा सकता है। जब भी इन प्रजातियों की संख्या अपेक्षित संख्या से कम हो जाती है। तब इन जानवरों को उन जंगलों में छोड़ा जा सकता है। वीर्य, डिम्ब तथा कोशिका बैंकों की मदद से आवश्यकता के अनुसार जानवर विशेष को पैदा किया जा सकता है। लुप्तप्राय जानवरों की प्रजातियों को इस दुनिया से गायब हो जाने से रोकने के लिए यह अंतिम प्रयास होगा। यदि इन प्रजातियों का नाश हो गया तो भावी पीढ़ियां प्रकृति की अद्भुत देन माने जाने वाले इन जानवरों को जीवित रूप में देखने से वंचित रह जाएंगी।

मूल्य

एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 90$

शिकायत : 25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 25846301, 04-07/370; 25841769
प्रोडक्शन : 25847353, 25846301, 04-07/217, 284
विज्ञापन : 25845359, बिक्री : 25841647, 25846301, 04-07/335, 295 फैक्स : 25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये सी एस आई आर - राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।